

المناسبات وأثرها على تفسير القرآن الكريم

() ()

(١) أستاذ مشارك في التفسير وعلوم القرآن، (٢) أستاذ التفسير وعلوم القرآن
كلية الشريعة والدراسات الإسلامية، جامعة الشارقة

الخلاصة

يعد علم المناسبات من أهم علوم القرآن التي تعين المفسر على تفسير النص القرآني المعجز الذي له وجوه إعجازية عديدة كجوهر ذات جوانب ترمي بالشعاع من جهات شتى. وهذا العلم يعيننا على رد مزاعم المستشرقين بأن القرآن الكريم غير مترابط الأجزاء في معظم سورته. وقد أولى علماءنا الكرام هذا العلم عناية فائقة في كتب التفسير وعلوم القرآن، حتى أنهم أفردوا له مؤلفات منذ بداية القرن السادس الهجري. وقد تولى هذا البحث إيضاح قضايا عديدة عن هذا العلم، فعرف علم المناسبات وفائدته في تفسير القرآن الكريم، ونشأة التأليف فيه. وينقسم البحث إلى قسمين رئيسيين وخاتمة وتوصيات وملحق بأهم الكتب والمقالات التي ألفت في هذا العلم.

أما القسم الأول فيتناول المناسبات في السورة الواحدة وهو أربعة أنواع:

النوع الأول: المناسبات بين كلمات الآية نفسها، والنوع الثاني: المناسبات بين آيات في السورة الواحدة، والنوع الثالث: المناسبات بين افتتاحية السورة وخاتمتها، والنوع الرابع: المناسبات بين اسم السورة ومحورها.

وأما القسم الثاني: المناسبات بين السور (خاتمة السورة وافتتاحية ما بعدها).

وقد أوصى البحث بضرورة اهتمام الجامعات والكليات الإسلامية والعربية بهذا العلم عبر تشجيع أساتذتها وتلامذتها بالقيام بأبحاث عن هذا العلم، وبتحقيق التراث الإسلامي الذي له علاقة بالمناسبات. وكذلك أوصى البحث بضرورة القيام بمشروع تفسير كامل للقرآن الكريم يجلي أمر المناسبات، ويتولى هذا المشروع علماء متخصصون في التفسير واللغة العربية وغيرها.

ABSTRACT

The science of relevance between the verses and the *suras* of the Qur'an is called (*al-Munasabah*). This science plays an important role in Qur'anic exegeses and helps in clarifying the inimitability of the Qur'an. Furthermore, it helps in refuting the Orientalists' allegations that the *suras* of the Qur'an are made of segments which are rarely connected.

This article discusses the emergence of this science, the writings of the scholars about it, its definition, and its importance in Qur'anic exegeses.

مجلة جامعة الشارقة للعلوم الشرعية والإنسانية المجلد ٢، العدد ٢ ربيع الثاني ١٤٢٦هـ، يونيو ٢٠٠٥م

This article is divided into two major parts, a conclusion and it is followed by an appendix about the major writings in this science.

The first part of this article deals with relevance between the verses within one *sura* and this part has four kinds. The first one is relevance between the words within one verse. The second kind is relevance between the verses within one *sura*. The third kind is relevance between the opening of a *sura* and its end. The fourth kind is relevance between the title (name) of the *sura* and its content.

The second part of this article deals with relevance between the *suras* (the end of a *sura* and the opening of the *sura* that follows it directly).

In conclusion, this article emphasises up on the importance of giving more attention to this science and to writing down a *tafsir* that concentrates on the relevance between the verses as well as the *suras* of the Qur'an. This initiative should be carried out by eminent scholars who are specialised in both Arabic and in Qur'anic exegeses.

:

:

.()

:

" : /
" ...

()

-)

/

(

:

.

-

-

(/)

:

(/)

:

:

(/)

:

(/)

(/)

(/)

:

(/)

:

(/)

:

(/)

(/)

"

- .

:"

...

- . "

:"

"

:

:

:"

:

:"

"

"

:

:

:"

"

عبدالله لطيف صطفى مسلم (١-٤٦)

(: . : .)

(...) : :

): (

: :

- : - : :

مجلة جامعة الشارقة للعلوم الشرعية والإنسانية المجلد ٢، العدد ٢ ربيع الثاني ١٤٢٦هـ، يونيو ٢٠٠٥م

: " :
:
) : . : .
(- : () :
(:
) :
(: () :
(- : () :
(: () :
... :
:" :

"

":
":
":

:

:

):

):

(

:

(

)

):

(

(

-

..

-

..

-

..

-

..

-

.

:

.(...

):

:

..):
.(

:

.. ..

()

:

! :

) :

(:

:

:

:

:

:

) :

() () :

() () ()
() () ()
()

) :

() -
- :

) :

- : (..

-):
- : (

()

):

- : (

- : ():

:

):

: (...

(-)

- :

(- -)

()

:)

" : ("

"

- :

:()

:() :

:"

"

:() -

:() -

) :

. - : (

) :

: (: ():

: :

:

:

"

"

) : () -

. - : (

): :

عبدالله لطيف صطفى سلم (١- ٤٦)

) :
:.... : (...
...) : (..) :
" : (...) :
[] :
:
:
) :
- : ()
() :
- : ()
()

مجلة جامعة الشارقة للعلوم الشرعية والإنسانية المجلد ٢، العدد ٢ ربيع الثاني ١٤٢٦هـ، يونيو ٢٠٠٥م

عبدالله لطيف صطفى سلم (١- ٤٦)

) :

: () : () : " :

...

) :

. : (

:

-

-

-

-

) :

مجلة جامعة الشارقة للعلوم الشرعية والإنسانية المجلد ٢، العدد ٢ ربيع الثاني ١٤٢٦هـ، يونيو ٢٠٠٥م

(: .

-

-

" : : : -

-

-

-

(/)

()

-

...

"

":

:

)

(

) :

:(

:

-

-

: (/)

:

(/)

-

/)

(

-

(/)

:

:

:

:(-)

:(/)

:

:()

-

-

-

(/)

-

(/)

-

(/)

-

:

:

-

-

-

-

: (/)

:

(/)

-

-

-

-

:

-

-

-

:

-

(/)

-

عبدالله لطيف صطفى مسلم (١-٤٦)

-

-

-

-

-

-

/

-

- :

/

:

:

-

/)

-

(

:

-

:

ربيع الثاني ١٤٢٦هـ، يونيو ٢٠٠٥م مجلة جامعة الشارقة للعلوم الشرعية والإنسانية المجلد ٢، العدد ٢

()

(/)

()

()

()

"

... ()

() " (-)

" : ()

"Geschichte des Qorans

()

(-) ()

(-) ()

:

(/)

- - (/)

- :

(/) ()

(/) ()

(/) ()

() ()

()

() : : - : :
: : - : : :
(:) : : ()
() : : : : - - : : :
: : : : : : :
(/ :) : : : : : : :
() : : : : : : : : : :
(/ :) : : : : : : : ()
: : : : : : : : : : ()
: : : : : : : : : : ()
: : : : : : : : : : ()
(:) : : : : : : : ()
: : : : : : : : : : (/ :) ()
: : : : : : : : : : (/ :) ()
: : : : : : : : : : (:) ()
(:) : : : : : : : ()
: : : : : : : : : : (/ :) ()
: : : : : : : : : : (:) ()
: : : : : : : : : : (/ :) ()
: : : : : : : : : : () ()
: : : : : : : : : : (/ :) ()
: : : : : : : : : : () ()

() : ﴿ ١٤٢٦ هـ، يونيو ٢٠٠٥ م

()

()

()

()

()

()

()

() :
 : :
 : : : ()
 " :
 : : ()
 :
 (/)
 .(/)
 :
 : : : ()
 : : : ()
 : /
 :)
 : (/
 : ()
 /
 : ()
 : : : ()
 : : : ()
 : : (/) ()
 : /
 : ()
 : ()
 / ()
 : ()

١٠٠	()
١٠١	()
١٠٢	()
١٠٣	()
١٠٤	()
١٠٥	()
١٠٦	()
١٠٧	()
١٠٨	()
١٠٩	()
١١٠	()
١١١	()
١١٢	()
١١٣	()
١١٤	()
١١٥	()
١١٦	()
١١٧	()
١١٨	()
١١٩	()
١٢٠	()
١٢١	()
١٢٢	()
١٢٣	()
١٢٤	()
١٢٥	()
١٢٦	()
١٢٧	()
١٢٨	()
١٢٩	()
١٣٠	()
١٣١	()
١٣٢	()
١٣٣	()
١٣٤	()
١٣٥	()
١٣٦	()
١٣٧	()
١٣٨	()
١٣٩	()
١٤٠	()
١٤١	()
١٤٢	()
١٤٣	()
١٤٤	()
١٤٥	()
١٤٦	()
١٤٧	()
١٤٨	()
١٤٩	()
١٥٠	()
١٥١	()
١٥٢	()
١٥٣	()
١٥٤	()
١٥٥	()
١٥٦	()
١٥٧	()
١٥٨	()
١٥٩	()
١٦٠	()
١٦١	()
١٦٢	()
١٦٣	()
١٦٤	()
١٦٥	()
١٦٦	()
١٦٧	()
١٦٨	()
١٦٩	()
١٧٠	()
١٧١	()
١٧٢	()
١٧٣	()
١٧٤	()
١٧٥	()
١٧٦	()
١٧٧	()
١٧٨	()
١٧٩	()
١٨٠	()
١٨١	()
١٨٢	()
١٨٣	()
١٨٤	()
١٨٥	()
١٨٦	()
١٨٧	()
١٨٨	()
١٨٩	()
١٩٠	()
١٩١	()
١٩٢	()
١٩٣	()
١٩٤	()
١٩٥	()
١٩٦	()
١٩٧	()
١٩٨	()
١٩٩	()
٢٠٠	()
٢٠١	()
٢٠٢	()
٢٠٣	()
٢٠٤	()
٢٠٥	()
٢٠٦	()
٢٠٧	()
٢٠٨	()
٢٠٩	()
٢١٠	()
٢١١	()
٢١٢	()
٢١٣	()
٢١٤	()
٢١٥	()
٢١٦	()
٢١٧	()
٢١٨	()
٢١٩	()
٢٢٠	()
٢٢١	()
٢٢٢	()
٢٢٣	()
٢٢٤	()
٢٢٥	()
٢٢٦	()
٢٢٧	()
٢٢٨	()
٢٢٩	()
٢٣٠	()
٢٣١	()
٢٣٢	()
٢٣٣	()
٢٣٤	()
٢٣٥	()
٢٣٦	()
٢٣٧	()
٢٣٨	()
٢٣٩	()
٢٤٠	()
٢٤١	()
٢٤٢	()
٢٤٣	()
٢٤٤	()
٢٤٥	()
٢٤٦	()
٢٤٧	()
٢٤٨	()
٢٤٩	()
٢٥٠	()
٢٥١	()
٢٥٢	()
٢٥٣	()
٢٥٤	()
٢٥٥	()
٢٥٦	()
٢٥٧	()
٢٥٨	()
٢٥٩	()
٢٦٠	()
٢٦١	()
٢٦٢	()
٢٦٣	()
٢٦٤	()
٢٦٥	()
٢٦٦	()
٢٦٧	()
٢٦٨	()
٢٦٩	()
٢٧٠	()
٢٧١	()
٢٧٢	()
٢٧٣	()
٢٧٤	()
٢٧٥	()
٢٧٦	()
٢٧٧	()
٢٧٨	()
٢٧٩	()
٢٨٠	()
٢٨١	()
٢٨٢	()
٢٨٣	()
٢٨٤	()
٢٨٥	()
٢٨٦	()
٢٨٧	()
٢٨٨	()
٢٨٩	()
٢٩٠	()
٢٩١	()
٢٩٢	()
٢٩٣	()
٢٩٤	()
٢٩٥	()
٢٩٦	()
٢٩٧	()
٢٩٨	()
٢٩٩	()
٣٠٠	()

- (:) .
- (/ :)
- () - .
- ()
- (/)
- .(
- -
- ()
- .(/
- (:)
- . (/ :)
- .
- .
- () : -
- (/)
- (/)
- (/)
- .(/
- (/
- (/ :)
- .
- . (/
- . (/
- .(/)
- . (/ :)
- . (/ :)
- . (/ :)
- .
- .
- .

-
-
- /
- (/ :)
- / (/ :)
-
-
-
- (/ :)
-
- (/ :)
-
- /
-
-
-
-
-
- (/ :)
- (/ :)
- (/ :)
- (/ :)
- (/ :)
- (/ :)

عد الله خطب صطفى سلم (١- ٤٦)

ربيع الثاني ١٤٢٦ هـ، يونيو ٢٠٠٥ م مجلة جامعة الشارقة للعلوم الشرعية والإنسانية المجلد ٢، العدد ٢